IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

शैव दर्शन में आभासवाद स्वरूप की परिकल्पना

काशीराम (शोधार्थी)

संस्कृत विभाग दिल्ली विश्वविद्यालय

दिल्ली ११०००७

नमः शिवाय सततं पञ्चकृत्यविधायिने ।

चिदानन्दघनस्वात्मपरमार्थाविभासिने[1] ।। १॥

शोध सरांश ⟹

प्रस्तुत शोध कार्य में शैव दर्शन में आभासवाद के स्वरूप के बारे में संक्षिप्त रूप में वर्णन किया गया हैं जिसमें यह कहा गया हैं कि आभास क्या हैं और इसकी क्या परिकल्पना हैं ,साथ- साथ में शैव दर्शन का चित्र प्रतिबिम्ब संक्षिप्त रूप से दर्शया गया हैं।

प्रस्तावना ⟹

महेश्वर के सर्जन की दृष्टि से यह दर्शन स्वातंत्र्यवाद कहलाता हैं उसकी अभिव्यक्ति या अभिर्भाव की दृष्टि से यह आभासवाद कहलाता हैं । समस्त विश्व का अधिष्ठान चित् या संवित हैं। चित्र- विचित्र , सदा परिवर्तनशील आभास उसी चित् के आविर्भाव मात्र हैं। जो कुछ भी किसी भी रुप में प्रकट हैं चाहे प्रमेय के रूप में चाहे प्रमाता के रूप में , चाहे ज्ञान के रूप में , चाहे ज्ञान के साधन या इन्द्रियों के रूप में , वह सब कुछ उसी परमचित् का "आभास" मात्र हैं । आभास का अर्थ – "आ" - (ईषत् अर्थात संकुचित रूप में) , भास (प्रकाशन) , कुछ संकुचित रूप में भासन या प्रकाशन आभास कहलाता हैं । सभी प्रकार का आविर्भाव परिसीमित होता है । जो कुछ भी विद्यमान है वह आभासों का विन्यास मात्र है ।

[1] प्रत्यभिज्ञाहृदयम श्लोक ० १

शैव दर्शन मे आभासवाद की परिकल्पना ⟹

दर्पणबिम्बे यद्वननगरग्रामादिचित्रमविभागि ।

भाति विभागेनैव च परस्परं दर्पणादपि च ॥

विमलतमपरमभैरवबोधात् तद्वत विभागशून्यमपि ।

अन्योन्यं च ततोऽपि च विभक्तमाभाति जगदेतत् ॥ [2]

आभास वाद की यादि बात की जाये तो कहा गया है कि जैसे दर्पण में चित्र विचित्र नगर , ग्राम इत्यादि के प्रतिबिम्ब दर्पण से अभिन्न् होते हुए भी परस्पर और दर्पण से भी भिन्न भासित होते हैं , वैसे ही यह जगत परमशिव के विमल संवित से अभिन्न होते हुए भी परस्पर और उस संवित् से भी भासित होता है ।

आभास दर्पण में प्रतिबिम्बित आकारों के समान हैं । जैसे दर्पण मे प्रतिबिम्ब उससे भिन्न नही हैं किन्तु भासित होता हैं इसी प्रकार आभास भी शिव से भिन्न् नही हैं किन्तु भिन्न् भासित होते हैं तथापि उससे भिन्न भासित होते हैं , उसी प्रकार महेश्वर के संवित में प्रतिबिम्बित जगत उससे भिन्न नही है । इस दर्पण की उपमा में दो अपवाद माननीय हैं

१- दर्पण में कोई वाह्य पदार्थ प्रतिबिम्बित होता हैं । महेश्वर की सार्वभौमचेतना में उसी की ही सृष्टिकल्पना प्रतिबिम्बित होती हैं , बाह्य पदार्थ नहीं दर्पण में एक वाह्य प्रकाश के द्वारा ही प्रतिबिम्ब सम्भव हैं । महेश्वर की सार्वभौम चेतना स्वयं अपना प्रकाश हैं । वह सब प्रकाशों का प्रकाश हैं । उसे किसी वाह्य प्रकाश की आवश्यकता नहीं होती हैं ।

२ - दर्पण् अचेतन हैं । उसे अपने भीतर के प्रतिबिम्बों का बोध नही हैं किन्तु महेश्वर तो चेतन है । उसकी चेतना में जो प्रतिबिम्बवत कल्पनाएँ प्रकट होती हैं उनका उसको पूरा बोध रहता हैं । आभास जो कि पशु या परिच्छिन्न जीवों को बाह्य रूप में प्रतीत होते हैं परम चेतना की कल्पनाओं के अतिरिक्त और कुछ नहीं हैं ।

अवर्विभाति सकलं जगदात्मनीह यद्वद् विचित्ररचना मुकुरान्तराले ।

बोधः पुनर्निजविमर्शनसारयुक्त्या विश्वं परामृशति नो मुकुरस्तथा तु ॥[3]

[2] परमार्थसार श्लोक (१२-१३)

[3] { परमार्थसार में योगराज द्वारा उदधृत पृ० सं ३९ }

जैसे – विचित्र पदार्थ के भीतर प्रकट होते हैं वैसे ही परम् संवित में जगत प्रकट होता हैं । किन्तुअ परम संवित को विमर्श शक्ति के द्वारा उसका बोध रहता हैं । दर्पण में उस प्रकार अपनेअ में उस प्रकार अपने में प्रतिबिम्बत पदार्थ का बोध नहीं रहता ।

समुद्र में तरंग के समान चेतना में आभास उठते हैं जैसे तरंगो के उत्थान और पतन से , समुद्र को न तो कोई लाभ हैं ,न हानि । आभासों के उत्थान और पतन से परम से परम चेतना को न कोई लाभ है न हानि । आभास प्रकट और लीन होते रहते हैं । किन्तु अधिष्ठानरूपी चेतना में कोई विकार या परिवर्तन नहीं होता । आभास महेश्वर की कल्पनाओं का बहि: प्रक्षेप मात्र हैं ।

चिदात्मैव हि देवोऽन्तःस्थितमिच्छावशादबहिः ।

योगीव निरुपादानमर्थजातं प्रकाशयेत् ॥[4]

चित्स्वरूप देव अन्तःस्थित पदार्थ समूह को अपनी इच्छा द्वारा बाहर प्रकाशित करता हैं जैसे योगी (संकल्प द्वारा कोई वस्तु बाहर आभासित कर देता है ।

जैसे कुम्हार मिट्टी लेकर बर्तन बनाता है उस प्रकार महेश्वर सृष्टि नहीं करता । सृष्टि का केवल अर्थ है। अन्तःस्थित कल्पनाओं को बाहर आभासित कर देना । महेश्वर को इसके लिये किसी वाह्य उपादान की आवश्यकता नही होती हैं । वहा अपनी इच्छा द्वारा ही ऐसा करने में समर्थ हैं । जो पदार्थ महेश्वर के ज्ञानस्वरूप हैं वे उसकी इच्छा से ज्ञेय के रूप में प्रकट होते हैं जो उसके अहं स्वरूप हैं वे इदं या विश्व के रूप में प्रकट होते हैं । जिवो को वे बाह्य रूप में आभासित होते हैं ।

उपसंहार ⇨

चित्स्वरूप महेस्वर ही प्रमाता और प्रमेयों के रूप में आभासित होता हैं । इसीलिये आभास मिथ्या नहीं कहे जा सकते । आभास महेश्वर की पूर्णता में कोई अन्तर नहीं ला सकता हैं । इस दर्शन का नाम स्वातंत्र्यावाद विवर्तवाद के विपरीत है, और आभासवाद परिणामवाद के विपरीत है । जैसे मयुर का सुन्दर रंग –बिरंगा पिच्छकलाप (पंख) उसके अंडे के रस में अविभिन्नरूप में निहित रहता हैं वैसे ही समस्त विश्व महेश्वर में अविभिन्न रूप से विद्यमान रहता हैं । इस सादृश्य को आभास दर्शन या मयूराण्डरसन्याय कहते हैं । अतः इस प्रकार शैव दर्शन में आभास वाद सिध्य होता है ।

[4] ईश्वर सिधि प्र० वि० पृ० १८५

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

प्राथमिक स्त्रोत

(क) साक्षात् स्त्रोत-

- ईशादि नौ उपनिषद् (शंकराचार्यभाष्यार्थ), गीताप्रेस, गोरखपुर, संस्करण-२०७२.
- सिद्धित्रयी सूर्यप्रकाश व्यास ,चौखम्बा संस्कृत संस्थान वाराणसी वि० सं० २०४७
- एकदशोपनिषत्संग्रह, सत्यानन्द स्वामी, विद्या प्रकाश प्रेस, संस्करण-१९८७.
- ब्रह्मसूत्रशांकरभाष्य (रत्नप्रभा टीका सहित) अनुवाद यतिवर श्री भोलेबाबा, भारतीय विद्या प्रकाशन, नई दिल्ली, २००४.
- ब्रह्मसुत्रशांकरभाष्य, सम्पादक स्वामि सत्यानन्द सरस्वती (हिन्दी व्याख्या एवं अनुवाद), गोविन्द मठ, वाराणसी, १९६५.
- ईश्वरप्रतिभिज्ञाविमर्शिनी : अभिनवगुप्त (भास्करी सहित), अय्यर, के.ए.एस. तथा पाण्डे, के.सी.(सम्पादक), मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली, १९८६.
- ईश्वरप्रतिभिज्ञा कारिका : उत्पलदेव, (सम्पादक) शास्त्री, मधुशुदनकौल, काश्मीर-संस्कृत-ग्रन्थावली,१९२१.
- तंत्रालोक : अभिनवगुप्त, राजानक,जयरथकृत-विवेकव्याख्यासहित, मिश्र, परमहंस (हिन्दीभाष्य एवं सम्पादन), वाराणसी, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्व विद्यालय, १९२२-९३.

(ख) परोक्ष स्त्रोत-

- वेदान्तसार, व्याख्या- सन्तन्नारायण श्रीवास्तव, चिरंजीव विहार, गाजियाबाद, २०१२.
- वेदान्तसार, व्याख्या- श्री रामशरण त्रिपाठी शास्त्री, चौखम्भा विद्याभवन, वाराणसी, २०१२.
- तन्त्रसार : अभिनवगुप्त, मिश्र, परम हंस (अनुवादक एवं सम्पादक), शक्तिप्रकाशन, वाराणसी.
- प्रत्यभिज्ञाहृदयम : क्षेमराज, सिंह, जयदेव (संपादक), मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली-१९६३.

द्वितीयक स्त्रोत

स्वतंत्र ग्रन्थ-

- शर्मा, राममूर्ति, भारतीय दर्शन की चिन्तनधारा, चौखम्भा ओरियन्टालिया, दिल्ली,२००८.
- गुप्ता, एस.एन. दास, भारतीय दर्शन का इतिहास (पाँचवा भाग), मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली, १९७५.
- शर्मा, चन्द्रधर, भारतीय दर्शन आलोचन एवं अनुशीलन, मोतीलाल बनारसीदास (प्रा.लि.), दिल्ली,२०१३
- शर्मा, राममूर्ति, अद्वैत वेदान्त (इतिहास तथा सिद्धान्त), ईस्टर्न बुक लिंकर्स, दिल्ली, तृतीय संस्करण- १९९८.
- उपाध्याय, बलदेव, भारतीय दर्शन, शारदा मन्दिर वाराणसी, १९९६.
- द्विवेदी, श्यामकान्त, काश्मीर शैवदर्शन एवं स्पन्दशास्त्र (स्पन्दशास्त्र, शिवसूत्र, स्पन्दसूत्र एवं शक्तिसूत्र समन्वित) चौखम्भा संस्कृत प्रतिष्ठान, दिल्ली-२००९.

कोश ग्रन्थ ⟹

- अमरकोश "नारायण" अमरसिंह विरचित चौखम्बा प्रकाशन वाराणसी १९९५
- अष्टाध्यायीसूत्रपाठ मिश्र "श्रीनारायण" ,पाणिनी गोकुलदास संस्कृतग्रंथमाला वा. १९७१
- शब्दकल्पद्रुम बहादुर "राजाराधाकान्तदेव" ,मोतीलाल बनारसी सं दिल्ली १९६१
- संस्कृत हिन्दी कोश आप्टे "वामन शिवराम", रचना प्रकाशन चाँदपोलजयपुर २००५

अन्तर्जालीय स्त्रोत ⟹

www.docs.google.com

www.lib.shodhganga.

www.lib.du.ac.in

www.lib.jnu.ac.in

www.sanskritbhasi.blogspot.com

www.sanskrit.nic.in

www.wikipedia.org

www.worldcat.or